होथल निगामरी और ओढा जामकी सुप्रसिद्ध लोककथाके वस्तुसाम्य एवं इसके आधार-बीजपर विचार

श्री पुष्कर चन्दरवाकर, राजकोट

सौराष्ट्र, कच्छ और राजस्थान में होथल एवं ओढा जाम की प्रेम कथा बहुत ही लोकप्रिय तथा सुप्रसिद्ध है, जो अपने-अपने प्रदेशकी जनवाणी अथवा लोक-कथाके रूपमें आज भी वहाँ-वहाँके लोगोंकी जिह्वापर स्थित है, साथ ही यह उन-उन प्रदेशोंकी जन-वाणीमें ग्रन्थस्थ भी कर दी गई है।

होथल-पद्मिणीकी लोक-कथाके महत्त्वके दो पाठ गुजराती भाषामें उपलब्ध होते हैं। उनमें[1] एक है स्व० श्री झवेरचन्द मेघाणी द्वारा सम्पादित कथा 'होथल' में और दूसरा पाठ प्राप्त होता है स्व० श्री जीवराम अजरामर गौर द्वारा सम्पादित 'उठोकेर अने होथल निगामरी'[2] में।

इसके आधार-बीजके विचारके लिये ये दोनों पाठ महत्त्वपूर्ण हैं। इन दोनों पाठों वाली होथलकी कथा वार्तालापका Trait-Study तुलनात्मक अध्ययनके लिये अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हो सकती है। इसे लोकभोग्य बनानेके लिये इसमें आवश्यक परिवर्तन किया गया है। लोक-कथाका गठन कैसा हो सकता[3] है, इस हेतु स्व० श्री झवेरचन्द मेघाणीकी कथा 'होथल'को विस्तारपूर्वक समझ लेना आवश्यक है। जब श्री स्व० गौरकी लोक-कथा 'निगामरी अने उठो केर'के आधारबीजके निर्णय हेतु विशेषरूपसे यह उचित प्रतीत होती है। डॉ० स्टिथ थोम्पसन[4] द्वारा बताई गई लोक-वार्ताके व्यावर्तक लक्षणोंपर दृष्टिपात करते हुए लोकवार्ताका अध्ययन करने हेतु भी ये दोनों पाठ उपयोगी लग सकते हैं। इस प्रकारसे ये लोक-कथायें अनेक दृष्टिसे लोक-शास्त्रज्ञको अध्ययन-सामग्रीकी पूर्ति कर सके, जैसी है।

किन्तु, यहाँ केवल आधारबीजके अध्ययन हेतु चर्चा-विचार-करनेकी आवश्यकता होनेके कारण स्व० श्री गौरकी लोक-कथाका पाठ विशेष उपयोगी सिद्ध होगा, ऐसा प्रतीत होता है। क्योंकि, उसका सम्पादन विशेष करके मूल लोककथाके आधारपर स्थित है, ऐसा स्पष्ट और वैज्ञानिक विचार मानसपर उभर आता है। उसकी वार्ताका सार निम्न है। इस लोक-वार्ताका काल नवमी शताब्दी का है।

---

१. सौराष्ट्र नी रसधार, भाग ४, संपादक : श्री झवेरचंद मेघाणी, प्रकाशक : श्री गुर्जर ग्रन्थरत्न कार्यालय, अहमदाबाद, पंचमावृत्ति ई० स० १९४७, पृ० १५ से ४९।

२. कच्छकी गुजराती लोकवार्ताओं, संपादक : स्व० श्री कवि जीवराम अजरामर गौर, प्रकाशक : राजारामजी गौर झांझीबार, प्रथमावृत्ति ई० स० १९२९, पृ० १९७ से २६४।

३. The Occen of Story, vol VIII, by C. H. Towny & N. M. Penzer, Pub. by Motila lBanarasidas, Varanasi, Indian Reprint, 1968, Forward, p. 10, 20, 21.

४. The Folk Tale, by Dr. Stith Thompson, Pub. by Holt Rinchart and Winston, Inc. New York, 1946, p. 456.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

होथलके पालक पिताका नाम सांगण निमागरा था। यह कच्छके किसी एक गाँव, जिसका नाम उपलब्ध नहीं हो रहा है, का निवासी था। इसे होथल जंगलमें पड़ी मिली थी। रूपवती होनेके कारण इसे सभी लोग सम्पन्न परिवारकी कन्या होना मानते थे। इसके सौन्दर्यके कारण लोग इसे इन्द्रकी अप्सरा भी कहते थे। तथा दैवी-स्त्री मानते थे। वह देवांगनामें गिनी जाती थी।

जब होथल वयस्क हो गई तब इसके साथ विवाह करने हेतु अनेक स्थानोंसे माँगणी की गई। किन्तु स्वयं होथलने ही अपने पालक-पितासे अपने विवाहके सम्बन्धमें अनिच्छा व्यक्त कर दी थी।

यह (होथल) रायर तालुकाके साई गाँवके नैऋत्यमें लगभग १ मीलकी दूरीपर होथलपुराके पहाड़में खोदे गये एक भूमि-गृहमें कुछेक दिनों तक एकान्तमें रही। वहाँ इसने लूट-फाट करनेकी इच्छासे निकले हुए होथी निमागरा नाम धारण कर घलूड़ाके सरदार बाँभणिया समाके ढोर समूहको घेर लेने हेतु निकली। उस समय इसका मार्गमें भाई द्वारा देश निकाला दिये हुए ओढा जाम और उसकी फौजसे मिलन हुआ। इस समय होथल अपने वेशमें परिवर्तन कर पुरुष-वेश में थी। इन दोनोंने मिलकर बांभणियाके ढोरसमूह (पशुओं) को घेर लिया और लगभग आठ दिन साथ-साथ ही बिताये। इनका तबसे ही प्रेमालाप प्रारम्भ हुआ।

जब ये दोनों एक दूसरेसे पृथक् हुए, तब इन्हें दुःख एवं वेदनाका अनुभव हुआ। लगातार आठ दिन तक स्नान नहीं किया जानेके कारण होथल अपने वस्त्र उतार कर चकासरके सरोवरमें स्नान करने लगी। ओढा अकेला ही रवाना हो गया। इसका घोड़ा कहीं दूर चला गया था। अतः उसकी खोज करने हेतु नजर दौड़ानेके लिये जब यह ऊँचाईके स्थान—तालाबकी पाल—पर चढ़ा तो उसने होथलके घोड़ेको एक पेड़से बंधा हुआ देखा। इसके वस्त्र उसे पेड़के नीचे पड़े हुए दिखाई दिये। साथ ही साथ तालाबमें होथलको तैरते हुए भी देखा। ओढा जाम वृक्षके नीचे आकर होथलके वस्त्रोंपर बैठ गया। उस समय होथलने उसे वस्त्र छोड़ कर जानेके लिए कहा। किन्तु ओढा जामने इसकी कोई परवाह नहीं की। तब इसने किंचित् क्रोधित होते हुए कहा, "तुम अभी यहाँसे दूर हट जाओ। पश्चात् हम परस्पर बात करेंगे।"

ऐसा सुनकर ओढा जामने कहा, "यदि तुम मुझसे विवाह करनेका वचन दो तो मैं तुम्हें तुम्हारे वस्त्र दे दूँ।"

उस समय होथलने एक पद्य कहा :

"ऊठा अरगोथी से, लंगे सरवर पार।
कंधासु सेज गाल, जिका तोजे मन में॥"

अर्थात् हे ओढा! तूं सरोवरकी पालको लाँघ कर दूर चला जा। तत्पश्चात् ही जो तुम्हारे मनमें है, उसपर हम परस्पर विचार करेंगे। तात्पर्य यह है कि तुम्हारे साथ विवाह करूँगी।

होथलने ओढाके सम्मुख निम्न शर्तें रखीं :—

१. हमारे परस्पर विवाहित हो जानेके बाद मैं तुम्हारे घरपर नहीं आऊँगी और जहाँ-जहाँ मैं रहूँ वहाँ-वहाँ तुम्हें भी रहना होगा।

२. मैं कौन हूँ, मेरा नाम क्या है, इस सम्बन्धमें किसीको कुछ भी नहीं बताया जाय।

३. इन शर्तोंके भंग होनेपर मैं तुरन्त ही तुम्हें त्याग दूँगी।

ओढा जामने इन शर्तोंको स्वीकार कर लिया और इनका परस्पर विवाह हो गया। लगभग दस

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वर्ष तक वे पहाड़ोंकी गुफाओंमें रहे और इनके जबरा और जैसंग नामक दो पुत्र हुए। एक दिन ओढा जाम अपने दोनों पुत्रोंके साथ प्रस्तर-शिलापर बैठा था, तब किसी मोरने अपनी गरदनको तीन बार हिला-हिलाकर ध्वनि की। जबराने मोरपर पत्थरसे घाव कर दिया। उस समय ओढा जामने जबरासे कहा : यह मोर, विस्मृत सगे-सम्बन्धियोंकी स्मृतिको ताजी करा रहा है। अतः इसे मारना नहीं चाहिए। इसी समय ओढा-को अपना प्रिय स्वदेश, प्यारे परिजन आदि याद आ गये और यह उदास हो गया। उसी समय होथल वहाँ आ पहुँची और ओढा जामको उदास देखकर जब इसका कारण पूछा तो ओढा जामने कहा कि, स्वदेशका स्मरण हो आनेके कारण उदासी आ गई है। अब तो सगे-सम्बन्धियोंका विछोह खटक रहा है।

इस सम्बन्धमें दोनोंके मध्य लम्बा वार्तालाप हुआ और अन्तमें यही निश्चय किया गया कि ओढ़ा जामके देशमें जाया जाय अवश्य किन्तु, वहाँ होथलसे कोई स्त्री पुरुष नहीं मिलेगा और ओढ़ा जाम द्वारा होथलके सम्बन्धमें कोई बात नहीं कही जावेगी।

ये अपने देशमें गये। होथीने अपने छोटे भाईके कथनको स्वीकार कर लिया। उसकी पत्नी मीणावतीका देहान्त हो गया था। इससे ओढाके कष्टका अब कोई कारण नहीं था। होथीने शासन-सत्ता ओढाको सौंप दी। ओढा जाम अपने पूर्व भवनमें होथलके साथ रहने लगा। यहाँ होथल किसीसे मिलती नहीं थी। अतः इसके सम्बन्धमें सगे-सम्बन्धियों द्वारा समय-समय पर ओढासे पूछा भी जाता रहा। किन्तु, उसके सम्बन्धमें वह अपने मुखसे एक भी शब्द नहीं कहता था। परिणामस्वरूप यह एक लोकचर्चाका विषय बन गया कि ओढा जामने किसी अनजान महिलाको रखेल स्वरूप रख लिया है। अतः इन दोनों (ओढा जाम और होथल) की यह निन्दा होने लगी कि नामालूम यह हलके वंशकी स्त्री कौन है ?

एक बार ओढा जाम नशेमें मदमस्त था। उस समय उसके और उसकी स्त्री होथलके सम्बन्धमें लोग निन्दा करने लगे। तब ओढाने कह दिया कि मेरे घरमें अनेक सिद्धियोंको प्राप्त हुई स्वर्गकी देवांगना है—और बाँभणसारके घड़ूला सोढाके विरुद्ध डाका डालनेवाली प्रसिद्ध सांगण निगामराकी पालित-पुत्री है और हम परस्पर लग्न-ग्रन्थि द्वारा जुड़े हुए हैं।

इस प्रकारसे इस गुप्त बातको ओढा जामने प्रकाशित कर दिया। जब यह समाचार होथलके कानोंपर पड़े तो उसने तुरन्त ही पृथक्-पृथक् निम्न चार पत्र लिखे।

१. आपने, अपने द्वारा स्वीकार की गई शर्तोंका भंग किया है। अतः मैं आपको त्याग रही हूँ।

२. मैं सदैव आपको देखती रहूँगी, किन्तु आप मुझे नहीं देख सकेंगे।

३. मैं आपकी एवं आपके दोनों पुत्रोंकी रक्षा अंतरिक्षमें रहते हुए भी करती रहूँगी।

४. अपने दोनों पुत्रोंके विवाह संस्कारके अवसरोंपर वैवाहिक-विधानानुसार मेरी आवश्यकताकी पूर्ति हेतु (पौखनेकी क्रियार्थ) उपस्थित रहूँगी।

होथल इन चिट्ठियोंको देकर रवाना हो गई। ओढाको जिस समय यह सूचना मिली तो यह वियोगके कारण पागल-सा बनकर दिवस व्यतीत करने लगा।

जब ओढा जामके पुत्र वयस्क हो गये तो थलके दो सोढा सरदारोंकी सुन्दर कन्याओंके साथ इन दोनोंका वाग्दान (सगाई) हुआ और विवाह भी हो गया। जिस समय ये दोनों विवाहकर वापस घर आये, उस समय होथल वैवाहिक-क्रियानुसार अपने दायित्वको पूर्ण करने हेतु उपस्थित हो गई। बड़ी बहूने साससे एक नवलखा हार मांगा जो इसने उसे दे दिया, किन्तु छोटी बहूने अपनी सासकी देख-रेखमें रहना और इसका निरन्तर सामीप्य माँगा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

होथलने इस माँगको स्वीकार कर लिया और सदाके लिए ओढा जामके साथ रहने लग गई।

कच्छकी भूमिपर की यह प्रचलित दन्तकथा ऋग्वेदकालके जितनी ही पुरानी है। ऋग्वेदमें उर्वशी पुरुरवाकी एक कथा आती है। उसके साथ इस कथाका अनुबन्ध है। उर्वशी-पुरुरवाकी कथाके साथ इस लोककथाका अत्यन्त साम्य है, समानता है।[1]

पुरुरवा पृथ्वीपर का एक मृत्युलोकी-मानव है, जबकि उर्वशी एक अप्सरा है। होथल भी एक अप्सरा ही थी[2], ऐसा कहा गया है। ये दोनों गान्धर्व विवाह द्वारा विवाहित बन जाते हैं और विवाहके अवसरपर उर्वशी भी शर्तें प्रस्तुत करती है—

१. दिनमें तीनसे अधिक बार आलिंगन न किया जाय।

२. पुरुरवा, नग्नदेहसे उर्वशीकी दृष्टिके समीप नहीं आना चाहिए।

३. उर्वशीकी इच्छाके विरुद्ध सह-शयन न किया जाय और यदि इनमेंसे किसी भी एक शर्तका भंग किया जायगा तो उर्वशी शीघ्र ही पुरुरवाको त्यागकर चली जाएगी।

इन शर्तोंको पुरुरवाने विवाहसे पूर्व ही स्वीकार कर लिया था ही।

स्वर्गको त्यागकर पृथ्वीपर आई हुई उर्वशीका वियोग गन्धर्व नहीं सह सके। इसलिये वे इन शर्तोंका भंग कराने हेतु युक्तियाँ लड़ाने लग गये। अन्तमें पुरुरवा निर्वसन-स्थितिमें उर्वशीके समीप उपस्थित हो गया। उस समय अन्धकार अवश्य था, किन्तु गन्धर्वोंने विद्युत-चमक उत्पन्न कर दी, ताकि उर्वशी इसे नग्न देख सके। पुरुरवाके नग्न शरीरपर दृष्टिपात होते ही उर्वशीको शर्त भंग हो जाना प्रतीत हुआ और जिसप्रकारसे होथल चली गई थी, उसी प्रकार उर्वशी भी चली गयी। उर्वशीके चले जानेपर पुरुरवा पागल हो गया। इस रूपमें स्नान करती हुई उर्वशीने, कुरुक्षेत्रके सरोवर तटपर पुरुरवाको देखा। यह दयार्द्र हो गई और जब उर्वशी पुरुरवाके समीप प्रकट हुई तब उसने उर्वशीसे प्रार्थना की कि तुम वापस आ जाओ।

अन्तमें देवताओंके वरदान स्वरूप पुरुरवाने पुनः उर्वशीको प्राप्त कर लिया।

इस प्रकारसे लगभग तीन हजार वर्ष पूर्वकी इस पुराणकथा Myth के साथ ही साथ होथल-पद्मिणीका ठीक-ठीक सम्बन्ध दिखाई देता है। उर्वशी-पुरुरवाकी कथा अत्यन्त प्राचीन प्रेमकथा है।[3] इसे अमर बनानेके लिए इसका दृढ़तर कला-पक्ष है। फिर भी यह कथानक एक प्रतीकात्मक रूपक है।[4] पुरुरवा उर्वशीकी सुनियोजित समस्त कथा ऋग्वेदमें नहीं मिलती है। किन्तु शतपथ ब्राह्मणमें यह उपलब्ध होती है। ऋग्वेदमें केवल अठारह संवादात्मक सूक्त उपलब्ध होते हैं परन्तु शतपथ ब्राह्मणमें तो यह समस्त कथानक विद्यमान है। श्री पेन्झरके मतानुसार महाभारत, विष्णुपुराण एवं अन्य पुराणोंमेंसे भी यह कथा मिल आती है।[5]

---

१. ऋग्वेद, संपादक : पं० श्रीराम शर्मा आचार्य, प्रकाशक : संस्कृति संस्थान, बरेली चतुर्थ संस्करण १, ३१, ४ : ५ : ३ : ४१ : ७, २३, ११ : ८, १८, ९५, ऋग्वेद कथा, सं० : रघुनाथ सिंह, प्रकाशक नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, पृ० २२६ से २४५।

२ कच्छनी जूनी वार्ताओ, पृ० २४१, सौराष्ट्रनी रसधार भा० ४, पृ० ४७।

३. The Occen of Story, vol. II, p. 245.

४. एजन, पृ० २४४, २५१, २५२।

५. एजन, पृ० २४८।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उर्वशी-पुरुरवाके इस कथानकमें तुलनात्मक निम्न मुद्दे ये है[1]—

१. अमर्त्य-नारी, मानवके साथ विवाह करती है ।
२. लग्न हेतु देवांगना मानवको शर्तें स्वीकार करनेके लिए कहती है ।
३. शर्त भंग हो जाती है और देवांगना मानवका त्याग कर देती है ।
४. देवांगना, हंसकुमारीके रूपमें परिवर्तन करती है ।
५. देवांगना एकान्त-वादन करती है।
६. व्यथित मानवके प्रति देवांगनामें अनुकम्पा उत्पन्न होती है और अन्तमें
७. इनका पुनः मिलन हो जाता है ।

होथल की लोक-कथाके वस्तुतत्त्वमेंसे महत्त्वके मुद्दे निम्न हैं, जो उर्वशी पुरुरवाकी पुराण-कथासे मिलते-जुलते हैं—

१. देवांगना जैसी होथल-नारीका ओढा जामके साथ लग्न होना ।
२. लग्नके सम्बन्धमें होथलकी शर्तें ।
३. शर्त-भंग और ओढा जामका त्याग ।
४. होथलका एकान्तवास ।
५. पुनरागमन और ओढा जामके साथ होथल का स्थायी निवास ।

इस प्रकारसे ओढा जाम और होथलकी दन्त-कथा ऋग्वेद और शतपथ ब्राह्मणकी उर्वशी-पुरुरवाकी कथाके साथ अकल्पनीय साम्यता सिद्ध करती है ।

उर्वशी-पुरुरवाकी कथा, पुराण कथा (Myth) है, जब कि होथलकी कथा मात्र स्थानीय दन्त-कथा (Local Legend) बन गई है । इस कथाको नवम शताब्दीकी होना बताया जाता है । इसी प्रकारसे उसके राजवंश-कुल, पिता-भ्राताके नाम, निवासस्थान, भ्रमण-स्थल, युद्ध इत्यादिके नाम निश्चित रूपसे मिलते हैं । इस प्रकारसे भ्रमणशील और विसरित होकर Hoaling पुराण कथा दन्तकथा बनी हुई है । किन्तु मूलमें तो यह उर्वशी पुरुरवाकी कथा ही है । श्री पेन्झर लिखते हैं कि यह आधार-बीज हंसकुमारीका (Swan-maiden) है और यह प्राचीन संस्कृत साहित्यमें उपलब्ध होती है ।[2]

इस पुराण-कथानकने पूर्वरूपसे संस्कृत साहित्यमें विकसित होकर कथाका रूप प्राप्त कर लिया है । तत्पश्चात् ही यह अन्य भारतीय भाषाओं एवं लोक-वार्तामें जन-साधारण योग्य बन पाई[3] और ऐसा करनेके लिए ठीक-ठीक समय भी व्यतीत होता गया ।

उर्वशी-पुरुरवाकी पुराण-कथा पूर्व एवं पाश्चात्य देशोंमें प्रसरित होकर फैल रही है ।[4] ग्रीसमें यह

---

१. एजन, पृ० २४८ ।
२. The Occen of Story, vol. 8, p. 234.
३. ,, ,,
४. ,, Appendix 1 p. 213–234.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कथा "क्युपिड और साइक"[1] की कथाके नामसे, जर्मनीमें "स्वान मेइडन"[2] के नामसे, फ्रासमें "मेलुसिना"[3] की कथाके रूपमें, स्काटलैण्डमें "दी सील वुमन"[4] के रूपमें प्रचलित है। जिप्सियोंकी लोक-कथामें "दी विण्ड मेइडन"[5] के रूपमें पहचानी जाती है। "कथा सरित्सागर" में मरुभूतिकी कथा है। वह भी इसी आधार-बीजकी कथा है।[6] भागवत पुराणमें कृष्ण गोपियोंके वस्त्रोंका हरण करते हैं। यह प्रसंग भी ऐसा ही है, जो यहाँ ध्यान देने योग्य है।[7] इस प्रकारसे ऋग्वेदमेंसे उत्पन्न यह कथा भारतभूमिपर लिखे गये शतपथ ब्राह्मण, विष्णुपुराण, भागवतपुराण एवं अन्य पुराणोंमें विकसित हुई, इस पृथ्वीपर लालन-पालन प्राप्त कर रही है।[8]

यह पुराण-कथा बाद में पाश्चात्य देशोंमें भ्रमणार्थ निकलती है। ग्रीस की ठीक-ठीक पुराण कथाओं में यही आधारबीज मिलता है।[9] श्री एन० एम० पेन्झरने इसका वर्णन विस्तारपूर्वक किया है।[10] और अनुमान लगाते हैं कि यूरोपकी प्राचीन मूल लोककथामें "हंसकुमारी" के आधारबीजका लेशमात्र भी अनुमान नहीं मिलता है।[11] वह कथा और उसका आधारबीज भारतवर्षमेंसे यूरोपीय देशोंमें आया है। इसी प्रकारसे ही यह पुराण कथा अफ्रीकाके और मध्य एशियाके देशोंमें प्रसरित हुई है जो भारत पर किये गये यवन-आक्रमणोंके कारण ही।[12]

यह पुराण कथा और इसका आधारबीज पूर्व देशोंमें भी घूमता हुआ दृष्टिगोचर हो रहा है। जापानमें उर्वशी-पुरुरवाकी पुराण कथाने अपना नाम बदल लिया और वहाँ यह "हिकोहोहो-डेमी[13]" के नामसे

---

१. A Handbook of Greek mythology, by J. H. Rose, Pub. by Methuen University, paperback, London, 1964, p. 287.
लोकसाहित्यविज्ञान, डॉ० सत्येन्द्र, प्रकाशक : शिवलाल अग्रवाल एण्ड कं० आगरा, प्रथमावृत्ति, पृ० २२२.

२. The Dictionary of Folklore Mythology & Legends, vol. II, Maria Leach, p.1091. The Folk Tale, p. 88.

३. The Dictionary of folklore Mythology & Legends, vol. II, p. 705.
लोकसाहित्यविज्ञान, पृ० २२२।

४. Folk-Tales from Scotland, by Philippa Gallomay, Pub. by Collins, London, reprint, 1945, p. 8.

५. The Gipsy Folk-Tales, by Dora B. Yeats, Pub. by Phonix House Ltd., London, 1948 p. 56.

६. The Occen of Story, vol. VIII, p. 58.

७. ,, 214.

८. एजन, पृ० २१७।

९. एजन, पृ० २२६।

१०. एजन, पृ० २२६।

११. एजन, पृ० २२६।

१२. The Occen of Story, vol. VIII, p. 227.

१३. The Dictionary of Folklore Mythology and Legends, vol. II, p. 705.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रख्यात हुई है। महाभारतमें शान्तनु और गंगाकी पुराण कथा भी इसी आधारबीजकी कथा है। राजस्थानमें की धाँधलकी कथा भी इसीका परिवर्तित रूप प्रतीत होता है।

इस प्रकारसे यह पुराण कथा अत्यन्त ही व्यापक Universal है[1] क्योंकि, उसका कथावस्तुतत्त्व अति मोहक है।[2] संसारके वार्ता-साहित्यमें इस प्रकारका अद्वितीय अन्य कथावस्तुतत्त्व कदाचित् ही दृष्टि-गत होता है। इस कथाका कथावस्तुतत्त्व है, दिव्य प्रेम।

डा० स्टिथ थोम्सनने अपने ग्रन्थ "दी फाक्टेल" मे ऐसी कथाओंके लक्षण एवं आधारबीजकी चर्चा विस्तारपूर्वक की है[3] और सारांशके रूपमें बताया है कि देवांगनाके साथ पुरुष शर्तोंका स्वीकार कर विवाह करता है तथा शर्त-भंग होते ही स्त्री, पुरुषको छोड़कर चली जाती है। संक्षेपमें कहा जाय तो दो प्रेमी परस्पर लग्न-ग्रन्थि द्वारा जुड़ते हैं किन्तु उनके मध्य शर्तें निश्चित होती हैं और शर्त-भंग होते ही देवांगना चली जाती है। ऐसा प्रतीत होता है कि डा० स्टिथ थोम्पसनने अपने "दी फाक्टेल" में मानों होथल और ओढाकी बात उन्हें ज्ञात ही हो और वे उसी पर ही लिख रहे हों, ऐसी अदासे लिखा है। आपने उसमें बताया है कि नायक, देवांगनाके साथ विवाह करता है और अपने दिन सुखपूर्वक व्यतीत करता है।[4] किसी एक प्रसंगपर नायकको अपने देश (वतन) को जाना याद आता है और पत्नी भी इसके लिये सहमत हो जाती है····और स्त्री, नायकको स्पष्ट शब्दोंमें कहती है कि देखना शर्त-भंग न हो, इसका भली प्रकारसे ध्यान रखना। वह भी कह देती है कि अपने मुखसे उसका नाम तक उच्चारित न हो जाय या उसकी जिह्वा से उसके नामसे आवाज तक न दे।

नायक स्वदेश जाता है और अपनी पत्नीके सम्बन्धमें जब बढ़ा-चढ़ाकर बातें करता है तब वह अपनी पत्नीको खो बैठता है। पति, अपनी पत्नीको खोजने निकलता है और वह अनेक कठिनाइयोंमें जा पड़ता है। उन्हें पार कर लेनेपर अन्तमें दोनोंका पुनर्मिलन होता है।

होथल और ओढा जामकी यही लोक-कथा है जिसका आधारबीज भी प्रेमीकी ओरसे "शर्त-भंग और त्याग" का है। अतः डा० स्टिथ थोम्पसन अपनी ओरसे इसके मानक एवं आधारबीजका क्रमांक लिखते हुए कहते हैं[5]—"This Series of notifes is frequently found in Type 400"

इस प्रकारसे होथल और ओढा जामकी स्थानीय दन्त-कथाका महत्त्व संसारकी अनेक लोक-कथाओंके साथ जोड़ा जा सकता है और संसार भरकी लोक-कथाओंके क्षेत्रमें उसको भी सम्मानपूर्ण स्थान अवश्य प्राप्त हो।

●

१. The Occen of Story, vol. VIII, p. 234.
२. ,, 233.
३. The Folk-Tale, pp. 87–93.
४. ,, 91.
५. ,, 88.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org